Paper-I
Part-B

# निदान पञ्चक विज्ञान

* निदानं पूर्वरूपाणि रूपाणि उपशयस्तथा।
संप्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पञ्चधा स्मृतम्॥ [अ.हृ.नि.1/2]

→ निदान
→ पूर्वरूप
→ रूप
→ उपशय
→ संप्राप्ति

These 5 methods are the means by which the diseases are examined.

## I निदान

• पञ्चविध मप्येतद् व्याध्युत्पत्ति ज्ञापि हैतुभूतं निदानशब्देनोच्यते। [मा.नि. 1/4]

The word निदान used in two different contexts i.e,
→ Diagnosis of disease - व्याधि उत्पत्ति ज्ञापि
→ Etiological factors of diseases - हैतुभूतं

* निरुक्ति of निदान -

1) निर्दिश्यते व्याधिरनेनेति निदानम्। [मा.नि. 1/4] (मधुकोश)
Which gives complete knowledge about व्याधि is called निदान

2) निश्चित्य दीयते प्रतिपद्यते व्याधिरनेन इति निदानम्॥ [मा.नि.1/4]
The method by which diseases is diagnosed is निदान

3) तत्र निदानम् कारण मित्युक्तमग्रे॥ [च.नि. 1/7]
It describes causitive factors of the disease.

1) निदीयते निबध्यते हेत्वादिसंबन्धो व्याधिरनेन ॥ [मा.नि.1/4] [मधुकोशटीका]

The one which gives knowledge about etiology, symptomatology, pathogenesis is called निदान.

* पर्याय of निदान -

1) निमित्त हेतु आयतन प्रत्यय उत्थान कारणैः ॥
निदानमाहुः पर्यायैः ॥

The synonyms of निदान are -

- निमित्त - निमित्तस्य शकुनार्दो।
  The one which shows the sign
- आयतन - आयतनस्य स्थानं।
  Place of origin of disease
- हेतु - हेतोः प्रयोजकं कर्तकारी।
  One which is the clever.
- प्रत्यय - प्रत्ययस्य लडार्दो।
  One which is responsible for.
- उत्थान - उत्थानस्य उद्गमनो उत्सर्गयोश्च दर्शनात ॥
  Originating area of the disease
- कारण - Causitive factor

2) निदानपर्यायास्तु हेतुर्निमित्तमायतनं कारकः कर्ता कारणं प्रत्ययः समुत्थानं मूलं योनिरिति ॥ [अ.सं.नि. 1/7]

- हेतु
- निमित्त
- आयतन
- कारक
- कर्ता
- कारण
- प्रत्यय
- समुत्थान
- मूलं
- योनि

* निदान भेद -

⟹ 4 Types of निदान
- सन्निकृष्ट
- विप्रकृष्ट
- व्यभिचारि
- प्राधानिक

⊙ सन्निकृष्ट -

The one which gives the knowledge of which dosha is involved in disease
Ex - भुक्तं दोष प्रकोप, ज्वर लक्षादर्शनम।

⊙ विप्रकृष्ट -

→ हेमन्ते निचितः श्लेष्मा वसन्ते कफ रोग कृत। [म.नि.1/5]
It gives the idea of समानदोष getting प्रकुपित in that ऋतु
i.e., कफ gets संचित in हेमन्तऋतु
प्रकुपित in वसन्त ऋतु
→ विप्रकृष्ट is distant/outer cause for the production of diss

⊙ व्यभिचारि -

दुर्बलत्वात व्याधिकरण असमर्थ। [म.नि.1/5]
→ If the दोष बल is less in that case रोग is not going to get manifest.
→ If दोष बल is more, रोग is going to manifest

⊙ प्राधानिक -

प्राधानिको यथा विषादिः। [म.नि.1/5]
Superior cause which is able to give instant effect.
विषादिः त्रिविधोव ॥ [त्रिविध कारण]

(i) असात्मेन्द्रियार्थ संयोग → नित्य आहार विहार रूप रसादि
(ii) प्रज्ञापराध - नित्य ज्ञानादि
(iii) परिणाम - ऋतु स्वभावत

⇒ 2 types of हेतु — बाह्य निदान/हेतु
आभ्यन्तर हेतु

① बाह्य हेतु - तत्र बाह्य आहार आचार कालादय:।
One which is responsible for external cause

② आभ्यन्तर हेतु - आभ्यन्तरश्च दोषदूष्याश्च।
The प्रकोपन of दोष & धातु can lead to disease

⇒ 2 types — अनुबन्ध्य
अनुबन्ध

① अनुबन्ध्य -
→ अनुबन्ध्य प्रधानम्। → It is prime cause
→ Ex स्वतन्त्र व्याधि shows व्यक्त लक्षण (clear) & उक्तसमुधान (Place were disease origin) and उपशय (easier)

② अनुबन्ध -
→ अनुबन्ध्यो अप्रधानम्। → It is secondary cause
→ तत् विपरीतं लक्षणा अनुबन्ध।
opposite to अनुबन्ध्य is अनुबन्ध
→ Ex - उपद्रवो अनुबन्ध:। It is परतन्त्र व्याधि

⇒ आशयापकर्ष हेतु -
प्रकृतिस्तं यथा पित्तं मारुत: श्लेष्मणं क्षयं।
स्थानादादाय गात्रेषु यत्रयत्र विसर्पति॥
तदाग्नेयश्च दाहश्च तत्र तत्र अनवस्थिता:।
धात्वदेशे अवत्यस्य श्रमोदौर्बल्य एव च॥

Normally, the दोष's have a particular pattern of causing a disease [क्रियाकाल ⇒ सञ्चय, प्रकोप, प्रसर, -]
Here, in आशयापकर्ष, पित्त does not attain प्रकोपावस्थ & moves from its own स्थान to other स्थान or without attaining प्रकोप moves into प्रसरावस्थ and creats the Particular diseases.

# II पूर्वरूप -
[Premonitory symptoms/Prodromal symptoms]

* पूर्वरूप निरुक्ति -

1) प्राग्रूपं येन लक्ष्यते।
उत्पित्सुशाम्यो दोष विशेषेणानाधिष्ठित:।
लिङ्गम् अव्यक्तम् अल्पत्वाद्व्याधीनां तद्यथायथम्॥
[अ.हृ.नि. 1/3-4]
→ Appearance of symptoms before manifestation of actual disease
→ पूर्वरूप or प्राग्रूप means which indicates the forth coming diseases but it is very difficult to identify the specific दोष दूष्य etc.,
→ Becoz of their poor manifestation & mild nature and same was discribed in respective chapters

2) पूर्वरूपं नाम येन भाविव्याधिविशेषो ज्ञायते न तु दोष विशेषस्तदुत्पत्स्यमानस्य व्याधेरल्पत्वादव्यक्तं रूपम्॥
[अ.स.नि]
which indicates the forthcoming diseases but it doesnot specify the pathogenic agents like दोष, दूष्य, etc due to mild nature and poorly manifested features

3) भावि व्याधि बोधकमेव लिङ्गम् पूर्वरूपम्॥ [मा.नि. 1/5-6]
which indicates the forthcoming diseases is called as पूर्वरूप

4) व्याधेरुत्पत्ते: पूर्वं यल्लक्षणं तत् पूर्वरूपं व्याधे:। [च.नि. 1/8] (Gangadhara)
Manifestation of symptoms before actual manifestation of diseases is called as पूर्वरूप.

5) अव्यक्तम् लक्षणं तस्य पूर्वरूपं इति स्मृतम्॥

6) पूर्वजा: पूर्वरूपाख्या। [अ.हृ. सू. 12/60]
Symptoms Manifest prior to manifestation of disease is called पूर्वरूप.

* पर्यायिs of पूर्वरूप -

- अग्रज
- उत्पत्स्यति
- पुरोगामि

* भेद of पूर्वरूप -

⇒ द्विविधं पूर्वरूप व्याक्षते, सामान्य पूर्वरूपं विशिष्टपूर्वरूप च ॥ [च.वि. 1/8] [गंगाधर]

पूर्वरूप is of two types -

1) सामान्य पूर्वरूप
2) विशिष्ट पूर्वरूप

1) सामान्य पूर्वरूप - [General symptoms]

→ Here general symptoms of disease manifest before the manifestation of disease but doesn't specify the involvement of दोष.

Ex - श्रमोऽरति विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः सामान्यतो । [सु. वि. 39/25-27]

→ Fatigue, restlessness, abnormal complexion, abnormal taste, lacrymation, etc.,, are सामान्य लक्षणs of ज्वर.

→ General पूर्वरूप manifest after the conglomeration of दोष with दूष्यs as a result in manifest पूर्वरूप of ज्वरादि व्याधिs. But it doesn't specify the वातादिदोषs

2) विशेष पूर्वरूप - [Specific symptoms] -

विशेषानु जृम्भाऽत्यर्थं समीरणात् ।
पित्तान्नयनौदाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥ [सु.उ. 39/27]

Symptoms which denotes dominance of specific दोष involved in सम्प्राप्ति and are continued in next stage i.e रूपावस्था.

- Specific premonitory symptoms of -
  - → वातज ज्वर - जृम्भ ⇒ excessive yawning
  - → पित्तज ज्वर - नयनदाह ⇒ Burning sensation of eyes
  - → कफज ज्वर - अरुचि ⇒ dislike the food

* Importance of पूर्वरूप -

→ With क्रियाकाल i.e स्थानसंश्रय represents पूर्वरूप by manifesting the premonitory signs & symptoms

→ It is the stage to perform the action (of treatment) i.e with attempt to perform treatment

→ साध्यासाध्यत ज्ञान

→ Knowledge of पूर्वरूप gives you confirmed diagnosis of diseases but we need to see the several associated features of diseases to make confirmed diagnosis

Ex - प्रमेह and रक्तपित्त

## III रूप -

* Definition

1) तदेव व्यक्ततां यातं रूपमित्यभिधीयते ॥ [च.नि.1/5]
→ Clearcut appearance of symptom is called रूप.

2) प्रादुर्भूतलक्षणं पुलिंगम् ॥ [च.नि.1/9]
→ Complete manifestation of symptoms is called लिङ्ग/रूप
→ It is fully manifested stage of disease with prominent clinical features
→ In this stage, निदान, उपशय & संप्राप्ति are not included.

3) उत्पन्नव्याधिबोधकमेव लिङ्गरूपम् ॥ [म.नि.1/7] मधुकोष
→ It indicates the specific disease by manifesting specific symptoms of that disease is called लिङ्ग.

* Synonyms/पर्यायि -
तत्र लिङ्गमाकृतिर्लक्षणं चिन्हं संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् [च.नि.1/9]
• लिङ्ग • लक्षण • संस्थान • रूप
• आकृति • चिन्ह • व्यञ्जन

* भेद of रूप -

1) सामान्य -
Eg - ज्वर सामान्य लक्षण

2) विशेष - Eg - वातज पित्तज कफज सामान्य लक्षण

* Importance of रूप -
→ Diagnosis of the disease
→ Prognosis of disease
→ 5th क्रियाकाल → 5th attempt of treatment
→ Nomenclature of the diseases
Eg - धनुस्तम्भ, उदर
→ प्रत्यात्मक लक्षण

## IV. उपशय -

Explorative Therapy

* Definition / निरुक्ति -

1) यत्तु व्याधिहरम् तत् वश्यम् दोषहरं तद् व्याधिम् ।
शमयत् तद् आदौ अपि दोषान् अपि क्षमयतीति ॥

The one which is going to reduce the disease प्रकुपित दोष's with the body. Also reduces the व्याधि & दोष in starting stage, i.e, उपशय

2) सुखावहमिति सुखं रोगनिवृत्तिलक्षणं। [च.वि.1/6] मधुकोष

The word pleasure used in context to upasaya means which gives happiness and pacify the disease

3) औषधादि जनित सुखानुबन्धः उपशयः ॥

The one which gives सुख / relief of symptoms of the disease is called उपशय.

4) सात्म्यार्थो हि उपशयार्थः ॥

If we are going to do the things good for health, leads to the आरोग्य, अनारोग्य.

The सात्म्य and उपशय are one and the same.

→ Factors like medicines, activities, food gives relief by using them directly against the cause or the disease itself or by both is called उपशय and which is conducive to the bodies physiological system.

* उपशय भेद -

हेतुव्याधिविपर्यस्तविपर्यस्तार्थकारिणाम् ।
औषधान्नविहाराणामुपयोगं सुखावहम् ॥
विद्यादुपशयं व्याधेः स हि सात्म्यमिति स्मृतः ।
विपरीतोऽनुपशयो व्याध्यसात्म्याभिसंज्ञितः ॥ [वा.नि.अ.1/8-9]

It is classified into 18 sub-Types -

1) हेतु विपरीत औषध
2) हेतु विपरीत अन्न
3) हेतु विपरीत विहार
4) व्याधि विपरीत औषध
5) व्याधि विपरीत अन्न
6) व्याधि विपरीत विहार
7) हेतु-व्याधि विपरीत औषध
8) हेतु - व्याधि विपरीत अन्न
9) हेतु - व्याधि विपरीत विहार
10) हेतु विपरीतार्थकारि औषध
11) हेतु विपरीतार्थकारि अन्न
12) हेतु विपरीतार्थकारि विहार
13) व्याधि विपरीतार्थकारि औषध
14) व्याधि विपरीतार्थकारि अन्न
15) व्याधि विपरीतार्थकारि विहार
16) हेतु व्याधि विपरीतार्थकारि औषध
17) हेतु व्याधि विपरीतार्थकारि अन्न
18) हेतु व्याधि विपरीतार्थकारि विहार

* Importance of उपशय -

→ गूढलिङ्गं व्याधिमुपशयानुपशयाभ्यां परीक्षेत ॥ [च.वि.4/8]

In case of difficulty in a diagnosis of disease due to some hidden things or mimics, the nature of diseases in such circumstances उपशय & अनुपशय therapy helps to diagnose the condition.

→ उपशय & अनुपशय also gives idea about prognosis of diseases.

→ Gives idea of which दोष is predominent in disease

## √ सम्प्राप्ति -

Pathogenesis.

* निरुक्ति of संप्राप्ति -

1) यथादुष्टेन दोषेण यथा चानुविसर्पता।
निवृत्तिरामयस्यासौ सम्प्राप्तिर्जातिरागतिः॥ [अ.हृ.नि. 1/8]

Process of understanding of development of disease by vitiated दोष's which are constantly circulating inside the body. It is also called जाति & आगति.

2) अत्रैके व्याधिजन्ममात्रहेतव्यापारजन्यं सम्प्राप्तिमाहुः॥ [च.नि. 1/11]

Factors which finally determines the manifestation of the disease is called संप्राप्ति

* पर्यायपद -

सम्प्राप्तिर्जातिरागति रित्यनर्थान्तरं व्याधेः॥ [च.नि. 1/11]

- संप्राप्ति
- निवृत्ति
- जाति
- निस्पति
- अगति

* संप्राप्ति भेद -

सा संख्याप्राधान्य विधिविकल्प बलकाल विशेषैर्भिद्यते। [च.नि. 1/11]

There are 6 types of संप्राप्ति -

1) संख्या
2) प्राधान्य
3) विधि
4) विकल्प
5) बल
6) काल